Toppersnotes
Unleash the topper in you

RAS

सामान्य अध्ययन पेपर-II

भाग-II

राजस्थान भूगोल

SIERRA INNOVATIONS
Private Limited

राजस्थान भूगोल

CONTENTS **PAGE NO.**

राजस्थान के भौतिक प्रदेश	1-34
राजस्थान की जलवायू	35-41
राजस्थान में मृदा संसाधन	42-52
राजस्थान में वन संसाधन *एवं* वानस्पति	53-65
राजस्थान की खनिज सम्पदा	66-88
राजस्थान में पशुधन	90-103
राजस्थान की जनजातियां	104-107
राजस्थान की कृषि	108-123
जनसंख्या	124-134
वन्य जीव और उनका संरक्षण	135-179
राजस्थान खनिज संशोधन	180-198
राजस्थान की परियोजनाऐं	199-209
महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर	210-222
योजना आयोग	223-248

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पेपर - I

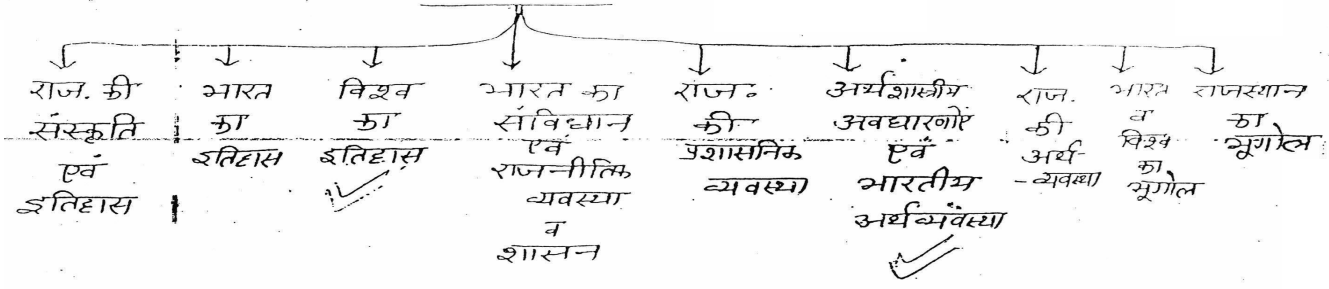

- राज. की संस्कृति एवं इतिहास
- भारत का इतिहास
- विश्व का इतिहास
- भारत का संविधान एवं राजनीतिक व्यवस्था व शासन
- राज. की प्रशासनिक व्यवस्था
- अर्थशास्त्रीय अवधारणाएं एवं भारतीय अर्थव्यवस्था
- राज. की अर्थ-व्यवस्था
- भारत व विश्व का भूगोल
- राजस्थान का भूगोल

नोट : प्रत्येक बिन्दु से 20-30 अंक के प्रश्न आएंगे। किसी एक विशेष विषय को महत्व न दें अपितु जितने अंक का है उसी अनुपात में अपने पढ़ने का समय एवं दिनचर्या तय करें।

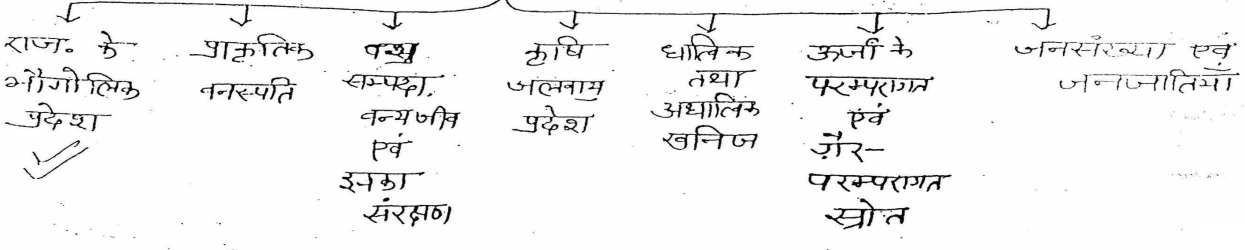

राजस्थान का भूगोल

- राज. के भौगोलिक प्रदेश
- प्राकृतिक वनस्पति
- पशु सम्पदा, वन्य जीव एवं इनका संरक्षण
- कृषि जलवायु प्रदेश
- धात्विक तथा अधात्विक खनिज
- ऊर्जा के परम्परागत एवं गैर-परम्परागत स्रोत
- जनसंख्या एवं जनजातियाँ

राजस्थान के भूगोल से संबंधित पाठ्यक्रम की विषयवस्तु :

1. राजस्थान के भौगोलिक प्रदेश
   - (A) राजस्थान के भौतिक प्रदेश
   - (B) राज. की जलवायु
   - (C) राज. की मृदा
   - (D) राज. की अपवाह प्रणाली
2. राज. की प्राकृतिक वनस्पति
3. राज. की पशु सम्पदा, ~~वन्य जीव~~
4. वन्य जीव एवं उनका संरक्षण

Toppersnotes
Unleash the topper in you

5. राज. में कृषि जलवायु प्रदेश
6. ऊर्जा के संसाधन

परम्परागत — गैर-परम्परागत

7. राज. की जनसंख्या
8. राज. की जनजातियाँ
9. धात्विक तथा अधात्विक खनिज

भूगोल : एक परिचय

परम्परागत अर्थ में भूगोल का आशय पृथ्वी एवं इसकी सतह से ही था परन्तु वर्तमान में भूगोल ज्ञान की वह शाखा है जिसमें पृथ्वी के स्वरूप, सांस्कृतिक विशेषताओं एवं मानव-पर्यावरण के मध्य होने वाली अन्त: क्रिया को समाहित किया जाता है।

भूगोल = अध्ययन f (पृथ्वी × मानव × मानव-पर्यावरण अन्तर्सम्बन्ध) क्षेत्र व समय

⇒ भूगोल के पिता – हिकेटियस

⇒ भूगोल शब्द का प्रथम प्रयोग – इरेटोस्थनीज

भूगोल की मुख्यत: दो शाखाएँ हैं –

क्रमबद्ध भूगोल (systematic)

→ भूगोल के विभिन्न तत्वों या तत्व-समूहों का अध्ययन तथा विश्लेषण क्रमबद्ध भूगोल में किया जाता है।

प्रादेशिक भूगोल (Regiona)

→ किसी विशिष्ट क्षेत्र की भौतिक विशेषताओं का अध्ययन तथा विश्लेषण प्रादेशिक भूगोल में किया जाता है।

नोट : उपर्युक्त दोनों शाखाओं को मोटे तौर पर भौतिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर दो भागों में विभक्त किया जा सकता है –

- भौतिक भूगोल
  - → भू-आकृति विज्ञान (Geomorphology)
  - → जलवायु विज्ञान (climatology)
  - → समुद्र विज्ञान (oceanography)
  - → जैव भूगोल (Bio geography)
- मानव/सांस्कृतिक भूगोल
  - → आर्थिक भूगोल Economic
  - → सामाजिक राजनीतिक socio-Political
  - → सांस्कृतिक भूगोल cultural
  - → प्रजातीय भूगोल Racial

भौगोलिक प्रदेश

प्रदेश :→ वह विशिष्ट क्षेत्र जिसकी निश्चित सीमा होती है, दूसरे क्षेत्र से विलग होता है, परस्पर निर्भर होता है तथा जिसमें औसत आंतरिक समरूपता पायी जाती है; प्रदेश कहलाता है।

प्रदेश = विशिष्ट क्षेत्र f (निश्चित सीमा × विलगता × परस्पर निर्भरता × औसत आंतरिक समरूपता)^{समय}

भौगोलिक प्रदेश :→ इसके अन्तर्गत समस्त भौतिक, सांस्कृतिक क्षेत्र एवं पारिस्थितिकी को शामिल किया जाता है।

इसके तीन अंग हैं –

- भौतिक प्रदेश या भौतिक भूगोल (Physical)
- मानव या सांस्कृतिक भूगोल (Human or cultural)
- मानव - पर्यावरण अन्तर्सम्बन्ध (Ecology)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नोट :- RAS के पाठ्यक्रम में 'भौगोलिक क्षेत्र' नाम से पाठ्य बिन्दु दिया गया है जिसमें हमे भौतिक प्रदेश, जलवायु, मृदा, जनसंख्या आदि का अध्ययन करना है।

भौतिक भूगोल: भूगोल की वह शाखा जिसमें सभी भौतिक विशेषताओं; जैसे उच्चावच (Relief), जलवायु, वनस्पति, मृदा आदि का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है उसे भौतिक भूगोल कहा जाता है।

मानव भूगोल : भूगोल की वह शाखा जिसमें विभिन्न सांस्कृतिक लक्षणों, कृषि, परिवहन, उद्योग, जनजातियों, समाज इत्यादि का अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है उसे मानव भूगोल कहा जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राजस्थान के भौतिक प्रदेश एवं विभाग
(Physical Regions & Divisions of Raj)

भूमिका : भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकीय पहलों को समाहित किया जाता है। किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तम्भ है - 'भौतिक प्रदेश'।

भौतिक प्रदेश = प्रदेश ∫ (उच्चावच × जलवायु × मृदा × वनस्पति) समय

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति इत्यादि का अध्ययन में औसत आन्तरिक समरूपता पायी जाती है।

निष्कर्ष एवं समसामयिक पक्ष : उपर्युक्त के समग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सार रूप में यह निरूपित किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, औद्योगीकरण एवं निर्वनीकरण, मानवीय हस्तक्षेप इत्यादि के कारण भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं जिसे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं भौतिक प्रदेशों के संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

राज. के भौतिक प्रदेश : भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिकी पदों को सम्मिलित किया जाता है। किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तंभ होता है — 'भौतिक प्रदेश'।

भौतिक प्रदेश = प्रदेश ∫ (उच्चावच × मृदा × जलवायु × वनस्पति) समय

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, मृदा, जलवायु, एवं वनस्पति इत्यादि में औसत आंतरिक समरूपता पायी जाती है।

राजस्थान के भौतिक प्रदेशों को मोटे तौर पर चार भागों में विभक्त किया जा सकता है।

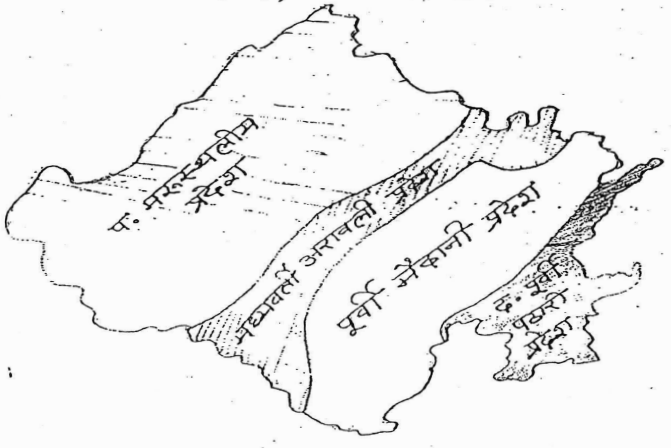

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश
2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश
4. दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश : अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में अवस्थित यह प्रदेश 50 cm वर्षा रेखा द्वारा विभाजित है। इसकी निम्नांकित विशेषताएँ हैं —

→ इसका क्षेत्रफल राज. के कुल क्षेत्रफल का लगभग 61% है। (2 लाख 62 हजार वर्ग कि.मी.) आबादी लगभग 40%।

→ इसकी उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तार 640 km तथा

Toppersnotes
Unleash the topper in you

पूर्व से पश्चिम की ओर विस्तार लगभग 300 कि. मी. है।

⇒ राजस्थान कृषि आयोग के अनुसार यह सिरोही के अतिरिक्त 12 जिलो मे विस्तृत है परन्तु वास्तव मे यह 13 जिलों में फैला हुआ है ; जैसे श्रीगंगानगर, हनुमानगढ, चुरू, सीकर, झुन्झुनु, बीकानेर, बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर, नागौर, पाली, जालौर तथा सिरोही (जैव-मरु प्रदेश)।

⇒ यहाँ ग्रीष्मकाल में तापक्रम 49°C तथा शीतकाल मे तापक्रम -3°C तक पहुँच जाता है जबकि औसत वार्षिक तापक्रम 22°C रहता है।

⇒ यहाँ वर्षा लगभग 20-50 cm तक होती है।

⇒ इस क्षेत्र में मरुद्भिद एवं शुष्क वनस्पति पायी जाती है; जैसे बबूल, खेजड़ी, बेर, केर, आक, नागफनी आदि।

⇒ यहाँ पर निम्न वायुदाब रहता है तथा गर्म तेज हवाऐं चलती है जिन्हे 'लू' कहा जाता है।

⇒ यहाँ पर ढाल सामान्य है जो उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर है।

⇒ यहाँ पर रेतीली बलुई मृदा विस्तृत है तथा खनिजों मे ग्रेनाइट, चूना-पत्थर, खनिज-तेल, प्राकृतिक गैस प्रमुख है।

⇒ पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश को दो भागों में बाँटा जा सकता है —

- पश्चिमी शुष्क प्रदेश
  - बालुका स्तूप युक्त प्रदेश
  - बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश
- पश्चिमी अर्द्धशुष्क प्रदेश
  - घग्घर का मैदानी भाग
  - शेखावाटी क्षेत्र
  - नागौरी उच्च भूमि
  - लूणी बेसिन

(1) पश्चिमी शुष्क प्रदेश : यह प्रदेश 25 से. मी. वर्षा रेखा के पश्चिम में अवस्थित है। इसे 'महान भारतीय मरुस्थल' तथा 'रेतीला शुष्क मैदान' भी कहते हैं। इसका उत्तरी भाग 'लघु मरुस्थल' या 'थली' कहलाता है।

इसके दो भाग हैं –

- बालुका स्तूप युक्त प्रदेश
- बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश

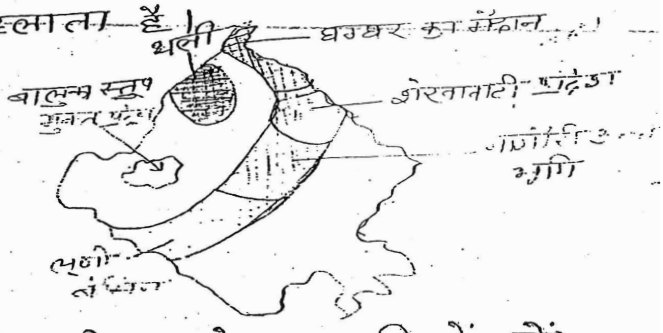

❖ (अ) बालुका स्तूप युक्त प्रदेश –

यह क्षेत्र बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर जिलों में विस्तृत है। बालुका स्तूपों को इनकी आकृति एवं विस्तार के आधार पर निम्नांकित भागों में बाँटा जा सकता है –

* धोरे / टीले : बालुका रेत के बड़े-बड़े ढेर बालुका स्तूप कहलाते हैं जिन्हे स्थानीय भाषा में धोरे या टीले कहा जाता है।

* अनुदैर्घ्य : पवन चलने की दिशा में बनने वाले बालुका स्तूप अनुदैर्घ्य या रेखीय या पवनानुवर्ती बालुका स्तूप कहलाते हैं।

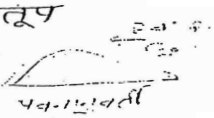

* अनुप्रस्थ : पवन की दिशा में समकोण बनाने वाले बालुका स्तूप अनुप्रस्थ बालुका स्तूप कहलाते हैं। 'बरखान' या 'अर्द्धचन्द्राकार' गतिशील बालुका स्तूप इसी श्रेणी में आते हैं।

* रैंग : मिश्रित मरुस्थल (रेतीला + चट्टान) रैंग कहलाता है जो जैसलमेर, बाड़मेर एवं जालोर में पाये जाते हैं।

* इर्ग : पूर्णतः रेतीला मरुस्थल 'इर्ग' कहलाता है जो बीकानेर जैसलमेर, बाड़मेर एवं जोधपुर में विस्तृत है।

→ इनके अतिरिक्त परवलयिक, तारा, नेटवर्क इत्यादि प्रकार के बालुका स्तूप भी यहाँ पाये जाते हैं।

(ब) बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश : यह मुख्यत: जालौर, जैसलमेर के आसपास (लौद्रवा व रामगढ़) एवं बाड़मेर में विस्तारित है। इस क्षेत्र में ग्रेनाइट, बालुका पत्थर, चूना पत्थर आदि चट्टानें पायी जाती हैं। इस क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता है – 'हमादा' (चट्टानी भाग)

(2) पश्चिमी अर्द्धशुष्क प्रदेश : यह क्षेत्र 25 से.मी. से 50 से.मी. वर्षा रेखा के मध्य पाया जाने वाला भाग है जो चार भागों में विभक्त है –

अ * घग्घर का मैदान

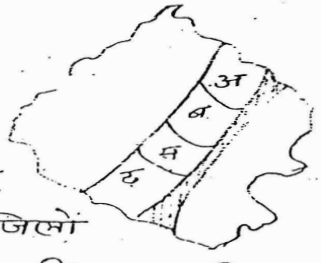

यह मैदान राजस्थान के सुदूर उत्तर में श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिलों में अवस्थित है। यह पौराणिक सरस्वती, दृषद्वति, चौतांग एवं घग्घर नदियों से निर्मित मैदान है। इसे आर्यवर्त एवं राज॰ का सबसे खुशहाल प्रदेश कहा जाता है। इसकी मुख्य विशेषता 'नाली' एवं 'पाट' है।

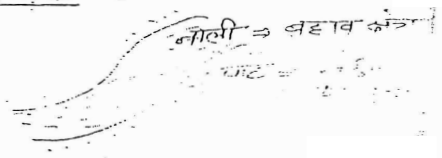

ब * शेखावाटी मैदान

इसे 'राजस्थानी बाँगड़ क्षेत्र' या शेखावाटी बांगर क्षेत्र भी कहा जाता है। यह सीकर, झुन्झुनु, चूरू एवं उत्तरी नागौर में अवस्थित है। यह आन्तरिक जल प्रवाह का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में सीकर जिले का मध्यवर्ती ढाल 'पनढाल' या 'जलसंभर' कहलाता है। यहाँ का मुख्य नदी 'कांतली' है।

स * नागौरी उच्च भूमि

यह मुख्यत: नागौर जिले में स्थित है जिसमें नावां, सीकरू, सांभर, कुचामन, डीडवाना आदि झीलें आती हैं। यहाँ नावां एवं परबतसर की पहाड़ियाँ हैं।

द * लूणी बेसिन

यह बेसिन अजमेर, नागौर, पाली, जोधपुर, बाड़मेर एवं जालौर जिलों में अवस्थित है। यह क्षेत्र 'गोड़वार' या 'माला प्रदेश' के नाम से भी जाना जाता है। इस बेसिन में पानी बालोतरा तक मीठा एवं उसके बाद खारा हो जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उपर्युक्त के सामग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सार रूप में यह निरूपित किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, एवं औद्योगीकरण, निर्वनीकरण, मानवीय हस्तक्षेप के कारण राज. के इस भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं जिन्हे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं इन क्षेत्रों के संरक्षण की नितान्त आवश्यकता है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश से संबंधित विशेष तथ्य

Q पश्चिमी राजस्थान में जल संरक्षण की पद्धतियाँ बताइए।

A. पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत रूप से जल संरक्षण की अनेक पद्धतियाँ पायी जाती हैं जो हैं -

Short cut - जल खड़ा है आना बा बेटो जोड़ने
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
जल संरक्षण पद्धतियाँ, खड़ीन, आगोर, नाड़ी, बावड़ी, बेरा या बेरी, टोबा, जोहड़

⇒ खड़ीन : उत्तरी जैसलमेर में कगारों से घिरी बेसिन खड़ीन कहलाती है। इसे पानी का उपयोग कृषि कार्यों के लिए किया जाता है। जैसलमेर के पालीवालों ने सर्वप्रथम इसे बनाया था।

⇒ आगोर : घर के आँगन में निर्मित जल संग्रहण के लिए बना टांका या झालरा आगोर कहलाता है।

⇒ नाड़ी : प्राकृतिक गड्ढे में जल का संग्रहण नाड़ी कहलाता है जिसके जल का उपयोग पशुपालन एवं दैनिक कार्यों के लिए किया जाता है।

⇒ बावड़ी : सामान्यतः सीढ़ीनुमा चौकोर तालाब बावड़ी कहलाता है।

⇒ बेरा या बेरी : खड़ीन या टोबा या नाड़ी से रिसने वाले जल के सदुपयोग के लिए इनके चारों ओर छोटे-छोटे कुएँ बना दिये जाते हैं जिन्हे जैसलमेर के आसपास के क्षेत्रों में बेरा या बेरी कहा जाता है।

⇒ टोबा : कृत्रिम रूप से निर्मित गड्ढे में जल संग्रहण टोबा कहलाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

जोहड़ या खूँ : शेखावाटी क्षेत्र में पाये जाने वाले कुएँ जोहड़ या खूँ कहलाते हैं जो टोबा या नाडी से रिसने वाले जल का सदुपयोग करने के लिए निर्मित किये जाते हैं।

निष्कर्षत : वर्तमान में जल संग्रहण की ये पद्धतियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं जिनके संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता है ताकि जल संकट का स्थायी समाधान सुनिश्चित हो सके।

Q. पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के प्रकार या क्षेत्र बताइए।

Ans पश्चिमी राजस्थान सामान्यत : शुष्क एवं मरुस्थलीय क्षेत्र हैं फिर भी कहीं-कहीं जल की उपलब्धता के कारण यहाँ हरियाली मिलती है। इस तरह पश्चिमी राजस्थान में हरियाली के भिन्न-भिन्न रूप निम्नांकित हैं —

(1) मरुद्भिद् (XEROPHYTE)

अरावली के पश्चिम में पायी जाने वाली कंटीली झाड़ियाँ एवं वनस्पति मरुद्भिद् कहलाती हैं। इनकी जड़ें अधिक गहरी तथा पत्तियाँ काँटों के रूप में होती हैं; जैसे बबूल, केर, बेर, नागफनी, आक, फोग, खेजड़ी, खींप, रोहिड़ा, झरबेरी इत्यादि।

(2) रोही : पश्चिमी राजस्थान में अरावली की ओर का हरियाली वाला वृक्षीय क्षेत्र 'रोही' कहलाता है।

(3) चाँधन नलकूप : जैसलमेर का वह क्षेत्र जहाँ भूमिगत मीठा पानी मिलता है; चाँधन नलकूप कहलाता है। इसे 'थार का घड़ा' भी कहते हैं। इसका कारण यहाँ पौराणिक सरस्वती नदी के अवशेष होना बताया जाता है।

(4) मरुद्यान या नखलिस्तान (OASIS) : मरुस्थल में वह क्षेत्र जहाँ जल की उपलब्धता होने के कारण वह क्षेत्र हरा-भरा हो जाता है; जैसे चाँधन नलकूप, श्रीकोलायत झील।

(5) तल्ली / मरहो / बालसन

मरुस्थल में बालुका स्तूपों के मध्य मिलने वाली निम्न भूमि तल्ली / मरहो / बालसन कहलाती है।

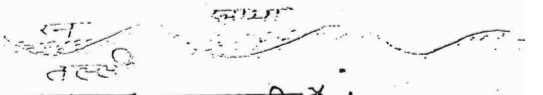

(6) रन / टाट

बालुका स्तूपों के मध्य ~~वर्षा व~~ स्थित तल्ली में वर्षा का जल भरने से निर्मित (अस्थायी) झीलें (या दलदल) रन या टाट कहलाती हैं।

(7) प्लाया / खारी झीलें / सेलिना या सेलाइना

बालुका स्तूपों के मध्य निम्न भूमि में जल एकत्रित होने से निर्मित खारी झीलें प्लाया कहलाती हैं।

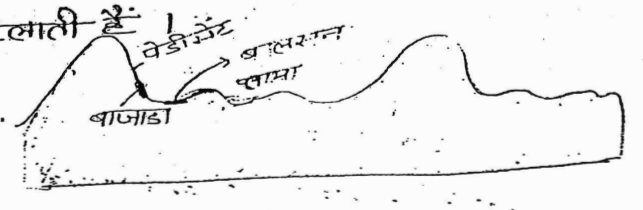

(8) लाठी ~~व~~ सीरीज

जैसलमेर के उत्तर पूर्व में 60 किमी. लम्बी भूगर्भीय जल पट्टी लाठी सीरीज कहलाती है। यह क्षेत्र 'सेवण या लीलोण' घास के लिए प्रसिद्ध है।

~~व. मरुस्थल~~

निष्कर्षत: मरुस्थल में ~~इन्हीं~~ इसी हरियाली के कारण पेड़-पौधे, जीव-जन्तु एवं मानव-जीवन मिलता है। यही कारण है कि थार का मरुस्थल विश्व का सर्वाधिक जैव-विविधता वाला मरुस्थल है।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न / तथ्य

⁂

⇒ मावठ / महावठ भूमध्यसागरीय चक्रवातों या पश्चिमी विक्षोभ से शीतकाल में होने वाली वर्षा मावठ कहलाती है। यह रबी की फसल (विशेषकर गेहूं) के लिए अमृततुल्य होती है। इस कारण इसे 'गोल्डन ड्रॉप्स' भी कहा जाता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

⇒ **समगाँव** : जैसलमेर जिले में अवस्थित पूर्णत: वनस्पतिरहित क्षेत्र है जहाँ फिल्मों की शूटिंग होती है तथा यह एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है।

⇒ **आकलगाँव** : राजस्थान का एकमात्र 'वुड फॉसिल्स पार्क' (लकड़ी के जीवाश्म का) है। यहाँ 4 करोड़ वर्ष पुराने जुरासिक काल के लकड़ी के अवशेष मिले हैं। यह राष्ट्रीय मरुउद्यान का ही भाग है।

⇒ **मरुस्थलीकरण** : मरुस्थल का निरन्तर प्रसार जिसके कारण भूमि का धीरे-धीरे बंजर होते जाना ही मरुस्थलीकरण कहलाता है। इसे 'मार्च पास्ट ऑफ डेजर्ट' भी कहते हैं।

⇒ **लघु मरुस्थल / थली** : थार के मरुस्थल का पूर्वी भाग जो कच्छ के रन से बीकानेर तक विस्तृत है; लघु मरुस्थल कहलाता है। यह अपेक्षाकृत नीचा है। इसे बीकानेर के आसपास के क्षेत्र में इसे थली तथा यहाँ के निवासियों को थलिया भी कहते हैं।

⇒ **धरियन** : जैसलमेर जिले में कम आबादी वाले स्थानों पर पाये जाने वाले स्थानान्तरित बालुका स्तूप धरियन कहलाते हैं।

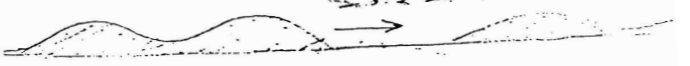

⇒ **सर/सरोवर** : विशेष रूप से शेखावाटी एवं सामान्यत: पश्चिमी राजस्थान में तालाबों को सर या सरोवर कहा जाता है; जैसे - अलसीसर, मलसीसर, कोडमदेसर आदि।

⇒ **मालाणी पर्वत श्रृंखला** : लूणी बेसिन का मध्यवर्ती घाटीवाला भाग जो मुख्यत: जालौर एवं बालोतरा में अवस्थित है; मालाणी पर्वत श्रृंखला कहलाता है।

⇒ **पीवणा** : पश्चिमी राजस्थान में पाया जाने वाला सर्वाधिक विषैला सर्प पीवणा है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2. मध्यवर्ती अरावली प्रदेश

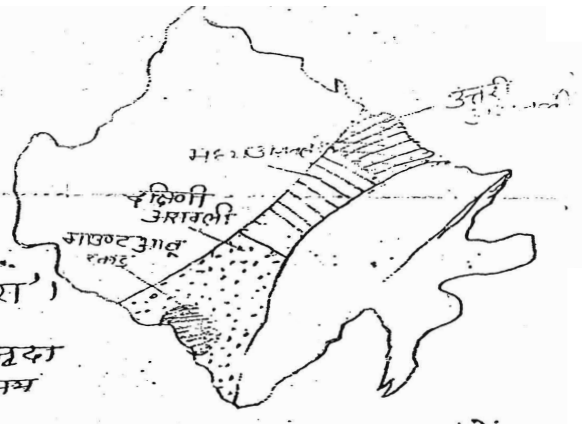

भौगोलिक प्रदेशों के अध्ययन में सभी भौतिक, सांस्कृतिक एवम् पारिस्थितिकीय पक्षों को समाहित किया जाता है। किसी भौगोलिक प्रदेश का आधार स्तम्भ होता है– 'भौतिक प्रदेश'।

भौतिक प्रदेश = प्रदेश ∫ (उच्चावच × जलवायु × मृदा × वनस्पति) समय

भौतिक प्रदेश वह विशिष्ट प्रदेश या क्षेत्र होता है जिसमें उच्चावच, जलवायु, मृदा, वनस्पति इत्यादि में औसत आन्तरिक समरूपता पायी जाती है।

अरावली पर्वत माला राजस्थान को दो भागों में विभक्त करती है। इसके नाम 'परिपत्र' (विष्णु पुराण), 'अरोउली', 'आड़ावला' पर्वत श्रेखला भी हैं। अरावली पर्वत श्रेखला का आकार तानपुरे जैसा है। इसकी भौतिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

→ इसका विस्तार दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर खेड ब्रह्मा (गुजरात) से रायसिना हिल्स (दिल्ली) तक है।

→ क्षेत्रफल – यह भूभाग राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 9% तथा जनसंख्या का लगभग 10% धारण किये हुए है।

→ लम्बाई एवं ऊँचाई – इसकी कुल लम्बाई 692 कि.मी. है जिसका 80 फीसदी (550 कि.मी.) राजस्थान में है। इसकी औसत ऊँचाई 930 मी. है।

→ जलवायु एवं वायुदाब – यहाँ उपार्द्र जलवायु पायी जाती है। औसत वायुदाब, वर्ष औसत वायुवेग एवं औसत तापक्रम पाया जाता है।

→ वर्षण – यहाँ 50 – 80 से.मी. के मध्य वर्षा होती है। 50 से.मी. वर्षा रेखा इसे पश्चिमी मरुस्थल क्षेत्र से अलग करती है।

→ खनिज एवं चट्टानें – यहाँ पर ताँबा, ~~अभ्र~~ लोहा, चाँदी, मैंगनीज आदि धात्विक खनिज एवं ग्रेनाइट, नीस, सिस्ट इत्यादि प्राचीनतम चट्टानें मिलती हैं।

→ प्रकृति – गोंडवाना क्षेत्र का यह भाग प्रिकेम्ब्रियन काल में निर्मित एवं अवशेषी वलयित पर्वत माला के रूप में है।

→ मृदा – यहाँ पर पर्वतीय मिट्टी तथा पर्वतीय अपरदन से निर्मित काली तथा लाल मिट्टियाँ पायी जाती हैं।

→ विस्तार – इसका विस्तार मुख्यत: 9 जिलों सिरोही, डूंगरपुर बांसवाड़ा, सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़-गढ़, अजमेर, पाली, भीलवाड़ा में है।

→ वनस्पति – यहाँ पर पर्वतीय वनस्पति जिनकी जड़ें कम गहरी होती हैं, पायी जाती है तथा यहाँ मुख्यत: मक्का की खेती होती है।

→ उच्चावच – इस क्षेत्र में पहाड – पहाड़ी; डूँगर – डूँगरी, दर्रे या नाल पाये जाते हैं।

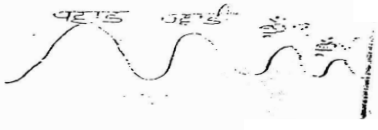

मध्यवर्ती अरावली प्रदेश पुन: चार भागों में विभक्त किया जा सकता है –

- उत्तरी अरावली
- मध्य अरावली
  - शेखावाटी निम्न पहाडियाँ
  - मेरवाड़ा की पहाडियाँ
- दक्षिणी अरावली
  - मेवाड़ का चट्टानी प्रदेश
  - भोराट का पठार
- ~~मध्य~~ आबू पर्वत खंड

Toppersnotes
Unleash the topper in you

उपर्युक्त के समग्र विवेचन, विश्लेषण एवं परिशीलन के उपरान्त सारत : यह निरूपित किया जा सकता है कि वर्तमान में जलवायु परिवर्तन, आधुनिकीकरण, शहरीकरण, औद्योगीकरण, निर्वनीकरण, मानवीय हस्तक्षेप इत्यादि के कारण भौतिक प्रदेश की संरचना एवं पर्यावरण में नकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। इसे रोकने के लिए धारणीय विकास एवं इस क्षेत्र के संरक्षण की नितांत आवश्यकता है।

मध्यवर्ती अरावली प्रदेश से संबंधित अन्य तथ्य

⇒ भाकर : सिरोही क्षेत्र में अरावली पर्वत माला की गोलाकार पहाड़ियाँ जिनका ढाल तीव्र होता है; भाकर कहलाती है। तथा ये ऊबड़-खाबड़ होती हैं।

⇒ गिरवा : उदयपुर क्षेत्र के चारों ओर स्थित तश्तरीनुमा पहाड़ियों के स्कंध को गिरवा कहते हैं।

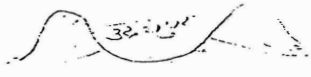

⇒ दिल्ली के टीले : दिल्ली में अरावली पर्वत माला लगभग विलुप्तप्राय है तथा टीलों के रूप में दृष्टिगत होती है जिसे स्थानीय भाषा में दिल्ली के टीले कहते हैं।

⇒ देशहरो : उदयपुर में जरगा व रागा के मध्य का पठारी प्रदेश जो वर्षभर हरा होता रहता है; देशहरो कहलाता है।

⇒ मालखेत की पहाड़ियाँ : अरावली पर्वत माला की सीकर में स्थित पहाड़ियों का स्थानीय नाम मालखेत की पहाड़ियाँ है।

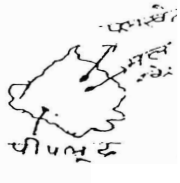

⇒ पालखेत की पहाड़ियाँ :